प्रह्लादचरित्र नाटक ॥

केदारनाथ कृत

जिसमें

प्रह्लादजी के समस्त चरित्र अतिही उत्तमता से बर्णन किये गये हैं

उसीको

प्रोप्राइटर सेठ टीकारामजी ने

बम्बई

स्पष्टाक्षरों में छपाकर प्रकाशित किया।

Gyan Bhaskar Press, Bara Banki 1905.

श्रीगणेशायनमः ॥

॥ प्रह्लादचरित्र नाटक ॥

॥ दोहा समाजियों का बचन ॥

गणनायक करवर बदन तुम्हें नवाऊं माथ ।
बिघन हरन शुभकरनहो जोरों दोनों हाथ ॥१॥
स्तुतिं माता कौनिबिधि करूं सरस्वती मायं ।
दर्शन अबमोहिं दीजिये सिद्धिकाम ह्वैजाय ।
नृसिंह लीला करन को कीन्हो है मैं बिचार ।
केदारनाथकी आस यह करूं हरकथा प्रचार ॥३॥

॥ पद ॥

सुमिरों शारद मात भवानी । देखस्वरूप रूप सब

मोहे महिमा तुम्हरी नहिंजात बखानी ॥ हौबल बुद्धि ज्ञानकी दाता तुम्हरी श्रुतिबरबानी । तीनलोक आधीन हैं जिनके तिनकी हो पटरानी ॥ प्रहलाद हेतु धरोध्यान तुम्हारो लीला मनमें ठानी । लक्षिमन कहत आस चरननकी धरूं तुम्हारो ध्यानी ॥ सुमिरों शारद मात भवानी ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

जै माता जगईश्वरी सकल लोक सरताज ।
भक्त आपनो जानके दर्शन दीनो आज ॥१॥

॥ बारतिक सरस्वतीजी ॥

अरे हमकूं क्यों यादकियो तुम्हारो कहा कामहै बर मांगो ॥

॥ बारतिक समाजियों की ॥

हे माता मैं नृसिंह लीला करनेको चाहूंहूं जामे कछू बिघ्न न होन पावै याही बर मांगूहूं ॥

॥ बारतिक सरस्वतीजी ॥

अच्छोजाउ तुम्हारी लीला में कछु बिघ्न न होन पावैगो ॥

॥ समाजियों का बचन आमद हरणाकुश ॥

एक समय हरणाकुश राजा मध्यसभा में आयोजी ।
अति बिकाल रूपभयकारी बहुते दुंद मचायो जी ॥
देखत डरे जिय नारी नरके बदनकंप थर्रायो जी ।

लक्ष्मिनदास कहत सतवानी राजादूत बुलायोजी ॥
एक समय हरणाकुश राजा० ॥

॥ बारतिक राजा हरणाकुश ॥

अरे दूत पूजा की सामग्री लाउ मैं शिवजी की पूजा करने को चलूंगो जल्दी से सब एकट्ठी करके लेआ ॥

॥ बारतिक दूत ॥

हां हां महाराज सब सामग्री एकट्ठी है पूजा करने चलो ॥

॥ पदपूजा का ॥

महादेव के मंदिर में राजा दर्शन को आया है रे ।
संगदूत थाली पूजाकी चरनन शीशनवाया है रे ॥
गंगाजल अस्नान करायो इतर सुगंध लगाया है रे ।
चंदन अक्षत बेलकी पाती ऊपर पुष्प चढ़ाया है रे ॥
अरु मेवाका भोग लगाके फिर आचमन कराया है रे ।
कर कपूरकी करी आरती शीशमें नीर लगाया है रे ॥
महादेव के मन्दिर में राजा दर्शन को आया है रे

॥ बारतिक महादेव जी ॥

अरे राजा मैं तुझसे बहुत प्रसन्न तू काहेको मेरी पूजा करनेको आया बरमांग मैं तुझको दूंगा जो मांगे सो पावैगो ॥

॥ बारतिक राजा ॥

हेमहाराज मैं यही मांगूंहूं की ना मैं दिन को मरूं

ना रातको मरूं ना कोई तिथिको मरूं ना कोई महीने में मरूं ना कोई साल मरूं ना कोई घड़ी मरूं ना कोई नक्षत्र में मरूं ना कोई हथियार से मरूं ना कोई जानवर से मरूं मैं कभी मरूंहीं नहीं बस मैं यही मांगताहूं ॥

॥ बारनिक महादेवजी ॥

अच्छो राजा मैंने तोकूं बरदियो ऐसोही होयगोजा॥

॥ पद राजा का ॥

बर पाके हरणाकुशराजा निकट सभाकेआया है रे ।
मनमाना बरपाया राजा लक्षिमन भजन बनाया है रे ॥

॥ दोहा समाजियों का बचन ॥

एक समय प्रह्लादजी आये कुम्हारिन द्वार ।
वाहीदिन कुम्हारिन बैठी हुती मनमार ॥१॥
बिल्लीहू वाही निकट फिर २ आवत जात ।
कुम्हारिनसों प्रह्लाद जी जायके पूंछीबात ॥२॥

॥ पद प्रहलाद का बचन ॥

क्यों बैठी मनमार कुम्हारिन जी ॥ मनमैलो कछु देखोंतेरो कौन सोहैगू बिचार । जो कछु होय द्रव्यकी चहिना देहों मैं अधिकार ॥ जो कछु कहेउ होय काहूने तुरते डारोंमार । या बिल्लीहू कूं मैं देखूं देखता लगै उदाश ॥ केदारनाथ करजोर कहत है मेंहिंकर प्रकाश ॥ कुम्हारिन० ॥

॥ कुम्हारी बचन ॥

न कछु मोहें द्रव्य चाहना न कछु मोहें विचार। बिल्ली के सुत अगिन चढ़े हैं राम बचावन हार॥ याही शोचमें मैं बैठीहूं याही सों मनमार। राम राम की रटन लगी है वाहीलेहैउबार॥ राम राम को नाम बड़ोहै रामहि जगविस्तार। केदारनाथ को राम राम हैं आठोजाम अधार॥ न कछु मोहें द्रव्य चाहना ०॥

॥ प्रह्लादजीका बचन ॥

कुम्हारीजी बोलो बचनसम्हार॥ जोसुनपावैमेरो पिताजी तुरतही डारेमार। कौन रामहैं मोंहिबताउ करत हो जिनकी सार॥ मेरे पितासे बढ़के दूजा सबई गये हैं हार। अगिन लगाय दईहै आंवामें तुरत बच्चे मर जाईं। कौन बचवानहार रामहै जो इन लेइ बचाई जोबच्चे बचजायँ कुम्हारिन देहों द्रव्य अघाई॥ जो मरजायँ तो तुरतही तोकों सूली देहों चढ़ाई। जो सांचो है रामतिहारो देहे परीक्षाआई॥ केदारनाथ को दास आपनो लेहें आय बनाई॥ कुम्हारी जी बोलो बचन सम्हर॥

कुम्हारी का बचन

रामरामकी बड़ी है माया समझलेउ मनलाई। राम से बढ़के औरना दूजा करूं मैं उनकी बड़ाई॥ सातद्वीप नौखंड हैं जाके वाहूराम मनलाई। बिना भजन किये

रामके कभू ना मुक्ती पाई ॥ जो नहीं लेत नामराम को उनकी बुरीकमाई ॥ केदारनाथ कर जोर कहत हौं राम हृदयमें रहो समाई । कुंवरजी कहैत बचन बिचार ॥

॥ दोहा प्रह्लादका ॥

जोतेरे सत्यके राम हैं तो आवां लेउ उतार।
बच्चे जीते जो बचैं तो मैं जानू है करतार ॥ १ ॥

॥ कुम्हारी का बचन ईश्वरसे ॥

हे ईश्वर दीन दयालहो पूरण करिये आश।
अपनी माया आयकै ह्यांयां करो प्रकाश ॥ २ ॥
धर्म्म मेरा अब राखिये आवां लेहु उतार।
ठाढ़े हैं प्रह्लादजी बोलत बचन अपार ॥ ३ ॥
बरतन जो आवांमें हैं निकाल लेऊँ मैंसोय।
केदारनाथ यों कहतहैं ईश्वर करै सो होय ॥ ४ ॥

॥ समाजियोंका बचन ॥

बरतन तो ऐसे पके जैसे पाके कांच।
जाही में बच्चे हुते वामें लगी न आंच ॥ ५ ॥
बिल्लीहू ठाढ़ी छिनै दूध पियायो आन।
करी प्रणाम प्रह्लादजी पारब्रह्म पहिचान ॥ ६ ॥

॥ ग़ज़ल प्रह्लाद जी का कुम्हारीसों ॥

रामकी माया समझमें मेरे अब आई है ये।
सच बचनतेरा कुम्हारिन मेरेमन भाई हैये ॥
जो कहा तुमने बचन सब मुझे मंजूर है।

रामकी घुट्टी मुझे अब तुमने पिलाई है ये ॥
पापकी माता अब वोहै पुण्यकी तू मात है ।
नेकराहबताये मुझेकी रामकहानी पढ़ाई है ये ॥
बिष दिया छुड़वाय तुमने और दिय इमरतपिला ।
रामराम सुमिरनकरूं दिलमें मेरे समाई है ये ॥
सबसेबस छुटकारा है और हरसे ध्यान लगाया है ।
मायहै न बाप है दिलमें मैंने बसाई है ये ॥
हरिसे दूजा कौन है जिसको मानो जानदे ।
अब ना मानूंगो किसीको बसकसम खाई हैये ॥
जायके माता पिताको खूब समझउंगा मैं ।
गरचे मानामेरा कहना हकउनके दवाई है ये ॥
ऐ माता रुखसत हैं मेरी भक्ति आपसे पाई है ।
केदारनाथ सूरतकहैं मैं हर कथा गाईहै ये ॥

॥ पद प्रह्लाद जीका मातासे ॥

रामराम सुखदाईहै मोकों । यह चिताय मैं देत हों तोकों ॥ रामराम अबभजतू माता और नामको त्यागन कर ॥ रामनाम ऐसो नीको नाहीं रहै काहूको डर बिषको छोड़ अब अमृत पीवो सबै काम तेरे जैहैं सर ॥ सातद्वीप नौखंडको राजा तीनलोक को मालिक है हर जो तू पढ़त आलजाल सब यह है सारो धोखो ॥ केदारनाथ को रामहै प्यारो याही रंगहै चोखो ॥ रामराम सुखदाई है मोको ॥

॥ प्रह्लाद जीकी माता का बचन ॥

लाल इन बातन नाहिं भलाई ॥ जोसुन पावै तेरो पिताजी तुरतै डारै मरवाई । रीति जो है कुलकी वह सारी तुमको है सुखदाई ॥ रीतिछोड़ अनरीति न कीजै कहत बचन समझाई । तीनलोक में है राजतिहारो कौंने कुमतिसिखाई ॥ तेरे पितासों कोई न जीतो सबको डारो हराई । कहतहौं मैं तुमसों समझाके कहा कुमति उपजाई ॥ जाको नाम लेतहै कुंवर तू वातेरे पिताको दुखदाई । बाल हठ तू बृथा करत है मानत नहीं हठराई केदारनाथ बलजाय तिहारे देतहौं तोहिं चिताई ॥ लाल इन बातन नाहिं भलाई० ॥

॥ पद प्रह्लाद जी का बचन ॥

माता तेरीमत गई है बौराई ॥ तीनलोक को नाथ रामगेरो वाको नामैं बिसराई ॥ चाहे पिताको हो दुखदाई मेरे तो है सुखदाई ॥ ब्रह्मादिक जितने देवता हैं हरकी महिमा गाई । मैं सुमिरौं मनलाय रामको तुम सुमिरो चितलाई ॥ अबतू पिताहूजी से कहो जाके राम सुमिरेसे है भलाई । मानुष जन्म पाय जिन हरको न भजन कियो न मन लाई ॥ वा नरको धिक्कारहै जीवो बड़ी है कुमत कमाई । रामराम तू कर मेरी माता कहत

हूं समझाई । केदारनाथ में रामरामको सुमिरन करूं चितलाई । माता तेरी मत गई बौराई ॥

दोहा प्रह्लादजीकी माता का बचन

जोमाने तू कुंवर नहीं तो राजा लेउँ बुलाय ।
राम कहानी सबतेरी वाको दूं समझाय ॥ १
समझाये समझत नहीं करत आपनीरार ।
पीछे सौं पछताय तू जब पिताडारै गो मार ॥२॥

॥ प्रह्लादजीका बचन दोहा ॥

अब डरमोको है नहीं सुन माता मेरीबात ।
रामबदन में रमरहो में भजनकरों दिनरात ३ ॥

बारातिक समाजियोंकी ॥

हरनाकुश राजा का महल में आना और रानी का प्रह्लाद जी की राम राम कहने का हाल कहना ॥

दोहा रानीका बचन ॥

एकबात मैं कहतहूं सुनो पिया मनलाय ।
प्रह्लादकुंवरको तुमकहीं पढ़ने दो बैठाय ॥४॥
रीति छोड़ि अनरीतिकर कहत बचन मुख मोड़ ।
रामराम रटना करत अपने कुलको छोड़ ॥ ५॥

दोहा राजाका ॥

पांड़ेको बुलवायके अब कुंवर को दूं बैठाय ।
अपने कुलकी रीति सब कुंवरको देयसिखलाय॥६॥

बारतिक राजा ॥

अरेदूतपांड़ेकोबुलालाप्रह्लादजीकोपढ़नेकोबैठारूंगो ॥

बारतिक दूत ॥

अच्छोमहाराज बुलाये लाऊंहूं पांड़ेजी तुमकोराजा बुलावैंहैं जल्दीचलो उठावोपोथी पत्रा लेउ लाठीपाठी॥

बारतिक पांड़े ॥

अरे दूत मोहे राजाने काहेको बुलायो है तू भी जाने है ॥

॥ दूत ॥

हां हां कछु तुम्हारी टही जगी है कछु हमको भी देना राजा प्रह्लादजी को पढ़ने बैठारैगो जल्दी चलो ॥

बारतिक दूत राजा से

अजी महाराज धिराज धर्म खंडन पापमंडन कुबुद्धि सागर दुष्टन के प्रतिपाल चण्डाल मूर्ति मैं पांड़ जी को बुलाय लायो पांड़े जी आसनी है बैठजाउ ॥

॥ बारतिक राजा ॥

अजी पांड़ेजी आयगये मेरी आपको दंडवतहै ॥

॥ बारातिक पांड़े ॥

आनन्द रहो राजा हमको काहेको याद कियो ॥

॥ बारतिक राजा की ॥

अजी पांडेजी मैंने प्रह्लाद को पढ़ाने बैठारनो चाहूंहूं याको मेरे कुलकीरीति पढ़ायदेव मैं तोकों खुश करूंगो ॥

॥ बारतिक पांडे ॥

अच्छो राजा मैं प्रह्लादजी को लिये जाताहूं खूब पढ़ादेवँगो चलिये प्रह्लादजी मेरी चटसारको जाऊं राजा ॥

॥ पद पांड़े का ॥

हरनाकुश हरनाकुश अब भज तू मनलायकेरे।
मारन कूटन हत्या करनं और नामको मत लेरे॥
याही काम से काम रख तू और काम अबमतकरेरे।
तेरे कुलकी रीति यही है और रीतिपर मत चलेरे॥
हरनाकुश हरनाकुश अब भज तू मनलाय केरे।

॥ पद प्रहलादजी का चौपाई ॥

राम राम लड्डू गोपालराम घी। हरिनाम मिसरी घोर घोर पी॥ याही नामसों काम है मोंको। हे लड़की समझाऊं तोको॥ पांड़े की मत गई बौराय। रामको तुम सुमिरो चितलाय॥ लड़कोजपो श्री रामही राम। केदार अन्त में आवैं काम॥ रामही भज रामही राम अन्तसमय जो आवै काम॥

सब लड़को के बचन ॥

राम राम है राम २ है सबसे बड़ो रामनाम है राम २ है राम राम ॥

॥ बारतिक पांड़े ॥

अरे प्रह्लाद तूने ये क्या कियो मेरी सब चटसार बिगारदई अपने कुलकी रीति छोड़ और अट सटपट बकनलगो अरेये कौनको नाम लेहै माराजायगो देख जो मैं पढ़ाऊं वाही पढ़ नहीं तू जानैगो जो और कुछ कह्यो ॥

॥ बारतिक प्रह्लादजी ॥

अरे सुन पांड़े या नाम में बड़ो गुन है या नाम को तू नाहिं जाने अरे पांड़े याही को सब संसार है याको दूजा कोई नहीं है याके सुमिरे से जन्म सुफल होय है और सुन पांड़े ॥

॥ पद प्रह्लादजी का ॥

रामराम सुनलेरे पांड़े जी ॥ और बात से काम न मोको मनमाला जपलेरे पांड़े जी । रामकोनाम कहूं निसबासर सकल बात तजदेरे पांड़ेजी ॥ जो तू राम नाम नहीं लेगो फेर दिननके तेरे पांड़े जी । रामनाम हृदय बिच मेरे निशदिन करत है फेरे पांड़ेजी । तेरे काम वही आवैगो अन्त समय की वेरे पांड़े जी

एक बात मैं तोसे आषत मन अपने में लेरे पांड़े जी। लक्षिमन कहै सुनरे पण्डित कालनिकट अबतेरेपांड़े जी ॥

॥ पांड़े का पद ॥

कुंवर तुम सीखो कुलकी रीति ॥ ऐसी करत नहीं कोई जगमें जैसे तुम करते अनरीत । राजतपे नौखंड तुम्हारो सब सब मानत भयभीत ॥ अति बलदाई हरनाकुशराजा देवतन छायो जीत । रामनाम से बैर है भारी ना काहूको मीत ॥ लक्षिमन रामसुमिर गुन गोवत हरदम हरि से प्रीत । कुंवर तुमसीखो कुलकी रीति ॥

पद प्रह्लादजीका ॥

पांड़ेजी तुम लेव रामको नाम ॥ रामही से सब कारज निकलै रामहीं आवै काम । राम बिना कछुहू नहीं सूझे रामहीं को धनधाम । रामहीको आठो छिन सुमिरो चाहे सबेरे शाम ॥ रामहीने सबसृष्टिरचाई रामहीने सबगाम रामहीकी हैगी यह माया भजलेउ आठो जाम जो कोई हरिकी निन्दा करत है वाकी बुरी गत होई अन्तसमयमें वाही नर के पास न आवे कोई ॥ जो हरि नाम लेत हैं नित प्रति वाको अंग गयो धोई । केदारनाथ मोहिं राम प्यारो और नाम ना कोई ॥ पांडेजी तुम० ॥

पद पांडे का बचन ॥

कुंवर तुम मानो हमारी बात ॥ अपने कुलकी रीति पढ़त नहीं बृथा बैस तेरी जात । अतुलित बली हरना-कुशराजा तीनों लोक डरात ॥ ताको भय पुत्र तोहिं नाहीं काहे को इतरात । समझाये समझत नहीं मूरख बहुत उतपात ॥ लक्षिमन राम सुमिर गुन गावत काहे का अठिलात । कुंवर तुम मानो हमारी बात ॥

प्रह्लादजी का बचन ॥

दिनदश लेउ गोविंदहि गाये ॥ मोह माया लोभ लाग्यो काल घेरो आये । नीर में जैसे उठत बुदबुदे देखत जात बिलाये ॥ देखतही बित जन्म छूट्यो काग स्वान ना खाये । कर्म का राज बांच देखो जो न मन पतियाये। सकल लोके भरम आयो लिखी न मेटी जाये अष्टवर्गदश द्वाररुंधे जरा पहुंचो आये ॥ सूरत प्रभुको भजनकीजै जन्म पातक जाये ॥ दिनदश लेउगोबिंद०॥

दोहा पांडे का ॥

समझाये माने नहीं तो चल अब मेरे साथ ।
हमसे तो पढ़तानहीं अब पढ़ैगो राजा हाथ ॥

बारतिक समाजियों की ॥

पंडेका राजा हरणाकुशके दरबार में जाना प्रह्लाद-जीकी चुगुली खानेको प्रह्लादजी को साथ लेके ॥

बारतिक पांडेकी ॥

अरे राजा अपने प्रह्लादजी को। तू आपही पढ़ालीजो मेरे पढ़ाये नाहिं पढ़ैगो और याने मेरी सारी चटसार बिगाड़ डारी और जितने लड़के मेरी चटसार में पढ़तेहैं उनको याने रामही राम पढ़ायदई मेरे पढ़ाये से नाहिं पढ़े याही की से पढ़ैहैं मोसेहू कहैं हैं की तुमहूँ राम राम करो सुनो ॥

॥ पद पांड़े का ॥

सुनोरे नृप अपने सुतकी खुटाई ॥ हम जो पढ़ावैं राजनीत को खैंचत रामदुहाई ॥ रामराम लड़कनको पढ़ावै देत सबनको बहिकाई। मोसे कहत भजो तुम हरिको मति तुम्हरी बौराई ॥ मेरी कही वह एक न मानत रामराम झरलाई। लक्षिमन राम सुमिरगुन गावत जन्म मरन छुटजाई ॥ सुनोरे नृप अपने० ॥

॥ बारतिक राजा ॥

अरे पण्डित जो तेरे पढ़ायेसों नाहिं पढ़ै तो जा-अपने घरको। अजी प्रह्लाद जी तुम नाहिं मानोगे देखो ॥

॥ पद राजा का ॥

पुत्र तुम समझत ना समझायो। मेरे बैरीको नाम लेत तुम जियमें क्रोध बढ़ायो ॥ नाम छांड़के

मेरो जग में रहन कौन है पायो। लेकिन पुत्रतुम मानो राजा त्रास दिखायो॥ पुत्र तुम समुझत ना समझायो॥

॥ पद प्रह्लादजी ॥

रामनाम मनभायो। पिताजी मोहि रामनाम मनभायो॥ कहतहूं मैं तुमसे समझा के हरभक्ती यह पायो॥ मोहिं नहीं अबकाम काहूसे रामहीं में मन लायो। रामहीको सुमिरन मैं करिहौं रामही को यश गायो॥ रामनामकी एक भक्तने मोको माया दिखायो रामनाम अब भजो पिताजी मैं तुमको समझायो। केदारनाथ करजोर कहतहौं नाहक क्रोध बढ़ायो॥ बुरी कमाई तेरी पिताजी रूठ पापपर धायो॥ पिताजी मोहि रामनाम० ॥

॥ दोहा हरणाकुशका ॥

तू कहना माने नहीं तो खूब करैगो याद।
शूलीपर मैंदूं चढ़ा देखूं कौन करै फरियाद॥ १ ॥

॥ दोहा राजाका जल्लादसे ॥

अरे जल्लाद अब आयके लेजा कुंवर प्रह्लाद।
शूली पर तू देचढ़ा अपने जीको साद॥२॥

॥ दोहा जल्लादका ॥

ऐसी खफगी क्याभई जो शूलीदेउं चढ़ाय।

मार कुंवर प्रह्लादको पीछे सों पछिताय ॥ ३ ॥

॥ दोहा राजाका ॥

लेजा शूलीदेनको बातैं नाहिं बनाय।
हुक्म अदूली क्यों करे है जान तेरी अब जाय ॥

ग़ज़ल प्रह्लादजी की ईश्वर से ॥

शूली चढ़ाने के लिये जाते हैं हम।
राम राम लेनेकी सज़ा पाते हैं हम ॥
ऐ मेरे ईश्वर ख़बर अब ले मेरी।
अब इस दुनियां से उठे जाते हैं हम ॥
माता पिता दुशमन भये हैंगे मेरे।
अब किसी दिलमें नहीं भाते हैं हम ॥
यह सकल सभा से है मेरी राम राम।
गरचे ईश्वरने चहा फिरके अभी आते हैं हम ॥
इतनी आफ़त ढाई है मेरे पिताने।
रामको दिल से नहीं भुलाते हैं हम ॥
ऐ पिता मरने का मैं हरगिज़ नहीं।
हर बसे घट में वही गाते हैं हम ॥
क्या कहे सूरत नहीं कुछ बस मेरा।
हुक्म ईश्वरका बजा लाते हैं हम ॥

समाजियों का दोहा ॥

जल्लाद चढ़ायो कुँवरको शूली ऊपर आप।

रांजाकी निन्दा करत पुन पुन देता श्रांप ॥
शूली से प्रह्लादजी बच गये ईश्वर आस ।
रामराम कहते चले अपने पिता के पास ॥

प्रह्लादजी ॥

श्रीनारायण,नारायण २ श्रीनारायण,नारायण २ ॥

बारतिक हरणाकुश ॥

अरे दूत देख ये प्रह्लाद कहां ते आय गयो क्या जल्लादने शूली नाहिं दई जल्दी बुलाय लाव जा ॥

बारतिक दूत ॥

अजी महाराज दयानिधान आपकी मौत आई याको ईश्वरने बचाय लियो तुमको भी ईश्वर मारैगो देखो जल्लाद अयो सुनलेव कहा कहे है ॥

बारतिक जल्लाद ॥

अजी महाराज दयानिधान प्रह्लादजी को मैंने शूलीपर चढ़ायके फेंक दियो ये फेर वाहींते नारायण नारायण करतो चलेआयो अबमें याको कहा करूं ॥

बारतिक हरणाकुश

अजी प्रह्लादजी देखो छोड़ देव वाको नाम

बारतिक प्रह्लाद ॥

अजी पिताजी में नहीं रामनाम छोडूंगो ॥

बारतिक हरणाकुश ॥

अरे दूत जा याको पर्वतसे डारदे जामें फेर न आवे

॥ समाजियोंकादोहा ॥

पर्बत पर लैजाय के डार दियो प्रह्लाद ।
रोवतेही घरको चलो आंसू डार जल्लाद ॥
रामराम कहते गिरे आये सिलाके बीच ।
रामनामके नीरसों ईश्वर दीन्हों सींच ॥४॥

॥ प्रह्लादजी ॥

श्रीनारायण नारायण नारायण श्रीनारायण ॥

॥ हरणाकुश ॥

अरे दूत प्रह्लाद फेर आय गयो अजी प्रह्लादजी अबहूं रामनाम छोड़ देव यामें बहुत भलीहै समझो ॥

॥ प्रह्लादजी ॥

नाहिं पिताजी मैं नहीं रामनाम छोडूंगो मोहिं बड़ा प्यारो है ॥

॥ हरणाकुश ॥

अरेदूत याको हाथीके पांवमें बांधके मारडारो जाव॥

॥ समाजियोंका दोहा ॥

सूंड़सों अपनी लपेटके लीन्हों ऊपर बैठाय ।
रामराम प्रह्लादजी पिताको सुनाई जाय ॥

॥ प्रह्लादजी ॥

श्रीनारायण नारायण२ श्रीनारायण नारायण३ ॥

॥ बारतिक हरणाकुश ॥

अजी प्रह्लादजी आप फेर आयगये देखो रामनाम छोड़देव मैं तोको बहुत समझाऊंहूं मानजाव ॥

॥ बारतिक प्रह्लादजी ॥

पिताजी मोसे रामनाम नाहिं छूटैगोमैं हृदयसेजपूंगो॥

॥ बारातिक हरणाकुश ॥

अरे दूतो देखो मैंने कितेनी यतन कीन्हीं प्रह्लाद नाहिं मरैहै कोई ऐसा जो प्रह्लाद को मारडारै मैं वाको बहुत खुश करूंगो ये मेरो पुत्र नहीं मेरो काल है ॥

॥ बारतिक राजाकीबहन की ॥

अरे भैया मैं याको मारूंगी लकड़ीकी चिता चुनवायदे मैं याको लैके वामें बैठजाऊंगी ये वामें जरजायगो मैं निकल आऊंगी मेरे अंगमे अगिननहीं व्यापै॥

॥ बारतिक हरणाकुश ॥

अरे दूतो जाव जल्दी लकड़ी ढेरकरो अगिन लगादेव प्रह्लाद जरजाय । जाव जाव जल्दी ॥

॥ बारतिक दूतोंकी ॥

हांहां महाराजहत्यानिधान ढेरहैआपकीबहनजरैगी।

समाजियोंका दोहा ॥

अगिन उठी वह चितासे बरनलगो चहुँओर ।
राजाकी बहनाजरी दूत मचायो शोर ॥
जबलकड़ी सब जरचुकी निकसे कुंवर प्रह्लाद ।
राजाके छक्के छुटे उलट पछाड़े खात ॥

॥ प्रह्लाद जी ॥

श्रीनारायण, नारायण, नारायण, श्रीनारायण,

नारायण, नारायण, श्रीनारायण, नारायण, नारायण॥

॥ बारतिक हरणाकुश ॥

अजी प्रह्लादजी आप फेर आयगये तुम जीते बचे देखो प्रह्लादजी अबहूं भली है वाको नाम छोड़देव॥

॥ बारतिक प्रह्लाद ॥

हां पिताजी मेरे ईश्वर ने बचाय लयो मैं अबराम नामनाहिं छोड़ूंगो तुमको जो कछु करनी होय सोऊ करलेउ मेरे तो रूम रूम में राम रम्यो है मैं सांची कहूं पिताजी॥

॥ बारतिक हरणाकुश ॥

अरी रानी देख कुँवर प्रह्लाद तो रामराम नहिं छोड़े सो तू वाको बिष पिलायदे सो वो तुरत फुरत मरजाय॥

॥ बारतिक प्रह्लाद माता ॥

अजी मैं नाहिं बिष पिलाऊंगी अपने कुँवरको मैंने नौ महीना गर्भ में राखो अब इतना बड़ो भयो मोसों हियो कठोर नाहिं कियो जायगो मोसे नाहिं पिलायोजाय॥

॥ बारतिक हरणाकुश ॥

अरी देख नहीं पछितायगी मैं तोकूं मारडारूंगो जल्दी बिष घोर के पिलायदे चटपट मरजाय जा जा॥

॥ बारतिक-माताकी ॥

अरे राम अरे राम मैं कैसे कुंवर को विष पियायदूं अरे कुंवर तू मानजा छोड़दे रामनाम कहनो मानले ॥

॥ पद प्रह्लाद जी का ॥

मैयारी मोहिं रामही भायो ॥ पिता नहीं ये शत्रु है मेरो लै पर्वत से दियो गिरायो । गज के पांव से बांध दियो मोहिं आय मेरो राम बचायो ॥ बापकी बहन बुआ मेरी बैरी बैरिन लेके अग्नि बिठायो । मैंने ध्यान धरो प्रभुजी को वाही भस्मकर मोहिं बचायो ॥ तू विष देमोको है अमृतमेरो राम सहायो ।लक्षिमन कहत सुनो मेरी मैया मैंहूं तेरो जायो मैयारी मोहिं रामही भायो ॥

॥ पदमाताका ॥

हाथजोरके सुमिरूं हरि को मोपर संकट भारी है। समझाये समझत नहीं राजा मूरख निपट अनारी है ॥ नौ महीना गर्भ में राखो अब विषकी तैयारी है। अति कठोर हिय भयो राउको मारन पुत्र विचारी है॥ कैसे पियाऊं मैं विष सुतको लोग कहैं हत्यारी है। लछिमन राम सुमरि गुणगावत रामराम पदधारीहै ॥ हाथजोर के सुमरूं० ॥

॥ पद प्रह्लादजी का ॥

सोचं न कीजै माता मनमें रामनाम हितकारीहै ।

सन्त उबारन नाम है उनको चारिउ वेद उचारी है ॥ जलमें थलमें पशुपक्षीमें रामरम्यो सरझारी है । तोमें मोमें समझले मनमें उनकी लीला न्यारी है ॥ विष मोको तू पिलायदे माता सोच करै क्यों भारी है । लक्षिमनदास कहत प्रभुलीला शेश थको केहारी है ॥ सोच न कीजे माता मनमें राम नाम हितकारी है ।

॥ पद माता का ॥

राम इनकी लीजो फेर बचाई ॥ या राजासों बस न चलतहै विष में देत पिलाई । अतिही कुटिल मूरख है राजा समझत न समझाई ॥ अपनी मानी करत है नष्ट ये रामनाम बिसराई । अंतसमै में ऐसेही मानुष पड़े है नर्क में जाई ॥ पुत्र आपनो मारत है नृप हाय दया ना आई । मोसे कहत विष तू पिलायदे नाहीं मौत तेरी आई ॥ हे ईश्वर ये बन्दना मेरी तुम सुनियो चितलाई । केदारनाथ आधीन है तेरो करत हौं तेरी बड़ाई ॥

॥ समाजियों का दोहा ॥

विषदीनो माता ने प्रह्लाद कुंवर पियाय ।
ईश्वर ने रक्षाकरी लीन्हों फेर बचाय ॥ १ ॥

प्रह्लादजी ॥

श्री नारायण नारायण नारायण श्रीनारायण नारा-

यण नारायण श्रीनारायण नारायण नारायण ॥
राजा मेरी रामने फिरभी करी सहाय।
विष तनमें ब्यापा नहीं रामे लियो बचाय ॥

॥ बारतिक हरणाकुश ॥

हे प्रह्लादजी देखो तुम रामनाम नहीं छोड़ोगे तो तुमको मैं लोहेके खम्भे को लाल अग्निमें करायके वासे तोको बांधके मारूंगो भलीहुँवो देखूंकैसे बचावैगो

॥ पद प्रह्लादजीका ॥

पिताजी मैं तो रामनाम गुणगैहौं ॥ और नाम सौं काम नहीं है और नाम नहिं लेहौं। तेरो नाम नहिं लेहुँ पिताजी सब ऊपर मैं सैहौं ॥ अमृत रूपी नाम छोड़के विष नाहीं मैं खैहौं। बारम्बार जानि कहो पिताजी तोको खूब रोवैहौं ॥ पितानहीं तू दुशमन मेरो राम राम अब कैहौं ॥ केदारनाथ भजु रामनाम को बेरबेर समझैहौं। रामनाम नहिं छूटै पिताजी कहतर तरिजेहौं ॥

॥ पद हरणाकुशका ॥

मानोरे कुंवरतुम बातहमारी। जो नहिं मानो कही हमारी होय बहुत अब तेरी ख्वारी ॥ पकड़ खम्भसे बांधों तोहीं। जोबोले फिर मारोंवोही। और बात फिर करियो सँभारी। मानोरे कुंवर तुमबात हमारी ॥ छोड़

दे वाको नाम कहूंमैं । तेरेसे बहुदुःख सहूंमैं ॥ ये अपने जियमार रहूँमैं । सत्य बचन यहतोसों कहूंमैं ॥ जादा नबढ़ाऊँ बातैं गँवारी ॥ मानोरेकुंवर तुमबातहमारी । केदारनाथ देछोड़ नामको । नहीं उड़ाऊं तेरे चाम को छोड़दे अबतूबाँही काम को ॥ भजन करत तू मेरे नामको । छोड़देरामनाम नहींमारूंगोकटारी ॥ मानो०

॥ पद प्रह्लाद जीको ॥

हरदम हरिसे ध्यान लगावो ये जग धुंध पसाराहै ॥ कर्चनकाया जिसनेदीनी वाको नाम बिसारा है । भाई बंधुसब ह्यां के साथी कोईनासंग सिधारा है ॥ चलत समैकोइ काम न अइहै नाता कौन निकारा है । येदेही सुमिरनको दीन्ही नाहकजन्म बिगाराहै ॥ माया पायकेभये लोभवश सिरपर कालकराराहै । लक्ष्मनकहै मानुममकहिनारामनाममोहिंप्याराहै ॥ हरदमहरिसे०

॥ दोहाहरणाकुश ॥

खैंच खम्भसों बांधिहौं जोनहिं छोड़ैनाम ।
हाथ में लैके खड्गको तोर उड़ाऊं चाम ॥

पद । ये कहके हरणाकुश धायो खड्गको हाथउठाई । आजहू नाम छोड़दे वाको क्यों मृत्यु तेरी नियराई ॥ बिन मारे मैं छांड़त नाहीं ना चलिहैचतुराई । लक्षिमन कहैं राम कहँ तेरो अबहिं न करत सहाई ॥ ये० ॥

॥ पद प्रह्लादजी ॥

सूझत नांहि पिताजी तुमको राम रहो जगछाई जल में थल में खड्ग खम्भ में शमैं रहो समाई ॥ मोमैं तोमें सकल सभा में हृदय में देत दिखाई ॥ लक्षिमन कहैं देर ना करिये सन्तन के सुखदाई ॥०सू॥

॥ प्रह्लाद की विनय ईश्वरसों ॥

खबर मेरी लीजिये भगवान ॥ सबै ठौर रक्षाकरी भक्त आपनो जान। अब काहेकी देर है स्वामी सुनो सहस दै कान ॥ भक्त आपनो लेव उबारी हो तुम कृपानिधान । अति आतुर है विनय करत हौं सुनियो तुम धरिध्यान। लेव खबर अबआय कृपानिधि देव मोहिं बरदान । केदारनाथ मैं विनय करत हों प्रकट होउ अबआन ॥ नहीं पिताजी कोई छिनमें लेहैं मेरो प्रान ॥ खबर मेरी० ॥

॥ दोहा समाजियों का ॥

खम्भफाड़ प्रकटभये धर नृसिंह को रूप ।
सब देवता स्तुतिकरैं कांप उठ्यो वह भूप ॥
राजा कीनी युद्धबहु नृसिंह रूपसों धाय ।
श्रीईश्वर करुणा निधि लियो बांह पैउठाय ॥
रांजासों पूछन लगे दिनहै कौनहै मास ।
नक्षत्र कौनतिथि कौनहै मोसेकर परकाश ॥

॥ बारतिक श्रीनृसिंहजी ॥

अरे राजा मैं कौनहूं आदमीहूं या जानवरहूं मेरे पास कोई अस्त्र शस्त्र तो नहीं हैं और कौन नक्षत्र कौन बार कौन तिथि कौन महीना है और दिन है या रात है बाहर है या भीतर है पृथ्वी में है या आकाश में है जल्दी बतावो ॥

॥ बारतिक हरणाकुश ॥

न तुम आदमी हो न जानवर हो न कोई तुम्हारे पास अस्त्र शस्त्र है ना कोई नक्षत्र है ना कोई बार है ना तिथि है ना कोई महीना है ना दिन है ना रात है ना बाहरहूं ना भीतरहूं ना पृथ्वी में हूं ना आकाश में हूं मोकों सूझे ना ॥

॥ दोहा समाजियों का ॥

अपनी माया फैलायके लीन्हीं सब कबुलाय ।
पेट फाड़ राजाहिको दिय बैकुण्ठ पठाय ॥

॥ स्तुति श्रीनृसिंहजीकी ॥

धन धन प्रगटे आपस्वामी स्तुतकरों करजोरके ।
कौन जगमें रहन पावै आपको प्रभु छोड़ के ॥
ब्रह्माने जब सृष्ट रचाई लेगयो दैत्य चुराय के ।
हिरण्याक्ष दैत्यको मार प्रभू धरती लाये धायके ॥
अतिही अधम यह कुटिलराजा आपही ईश्वरबनो ।

ब्राह्मण को याने दुखदीन्हों भक्तकों याने हनो ॥
आपकी महिमाको स्वामी ऋद्धिसिद्ध सबगावहीं ।
कोटिकोटि जतन करै प्रभु आपको नाहिं पावहीं ॥
अतिकुटिल यह पापिष्टहैके आपको दर्शनकियो ।
धन्यभक्तन हेतस्वामी औतारतुमनित नयलियो ॥
भक्तपरजब दुःख व्यापै औतार धरिआप धावहीं ।
भक्तके कारण से स्वामी पापीहु तर जावहीं ॥
कामभक्तनके किये तुम कहांलगि अबगाऊँ मैं ।
केदारनाथ बहु देखि लीला आपको शिरनाउं मैं ॥

॥ बारतिक श्रीनृसिंहजीकी ॥

अजी प्रहलादजी धन्य है तेरी भक्ती को और तेरे हृदय को मैं तोसे बहुत प्रसन्नहूं तुम मोसे बर मांगो मैं तोको देउँगो ॥

॥ बारतिक प्रहलादजी ॥

हे महाराज धन्य है आपको और आपकी माया को और आपकी कृपाको और आपके रूप स्वरूप को कि हम ऐसों को आपने दर्शन दीनें हैं महाराज मैं आपसे यही मांगों की मेरे हृदय से आपकी भक्ती ना छूटे और मेरे कुलमें जो पैदा होय वाहुके जीमें भक्ती आपकी बनी रहै "

आरतिक श्रीनृसिंहजीकी

अच्छो प्रह्लादजी मैंने तोको बरदियो जा आनन्द रहै ॥

॥ दोहा समाजियों का ॥

दैबरदान प्रह्लाद को भयेसु अन्तर ध्यान।
पूरण कीन्हो चरित्र यह केदारनाथ अज्ञान ॥

इति श्रीनृसिंह व प्रह्लादलीला केदारनाथ व लछिमनदासकृत समाप्तम् ॥